द्वितीय अध्याय

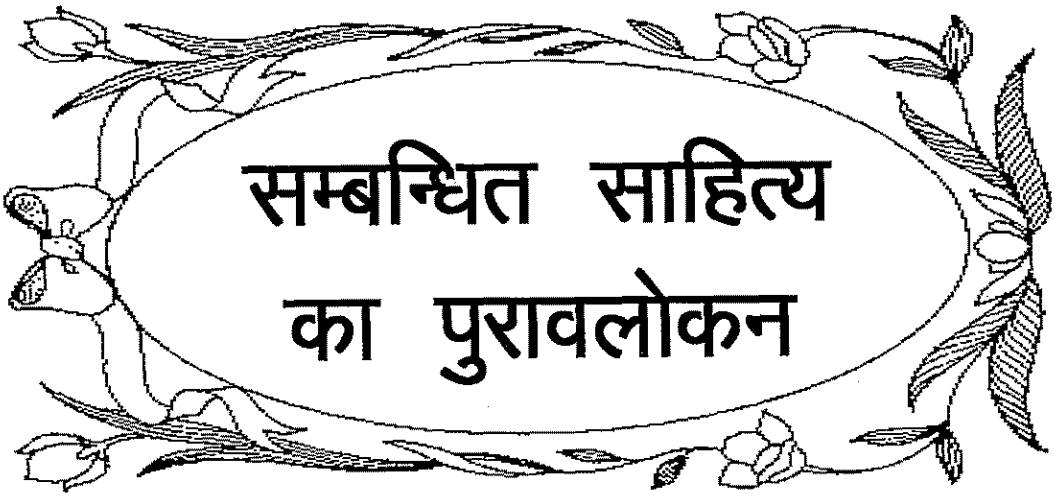

अध्याय–2

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका :–

सतत् मानव प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधायक द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संबंधित समस्याओं पर कार्य से बिना जोड़े, स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता। साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। किसी भी क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान करना है तो हमारे लिये उससे संबंधित साहित्य का अवलोकन एक अनिवार्य और प्रारंभिक कदम होता है।

सर्वेक्षण न करने से जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकत्र द्वारा अच्छे प्रकारसे किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है। ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिये आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहां पर है, वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है। पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।

2.2 पूर्व शोधकार्य का आंकलन :–

प्रस्तुत अध्याय में अभिभावकों और शिक्षकों का बच्चों के प्रति व्यवहार और अभिवृत्ति से सम्बंधित पूर्व में किये गये शोध कार्यो को सम्बन्धित साहित्य का पुरावलोकन के रूप में लिया गया है जो निम्नप्रकार हैं।

1 शेख नसरीन रेहमान

शैक्षिक विकल्प का चयन और अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन' (1994)

उददेश्य –

– अभिभावकों की स्वीकृति तथा अस्वीकृति का बच्चों के शैक्षिक विकल्पों के चयन पर होने वाला असर ज्ञात करना।

– अभिभावकों की स्वीकृति तथा अस्वीकृति का बच्चों के शैक्षिक विकल्प के चयन में लैंगिक पक्षपात पर होने वाला असर ज्ञात करना।

– <u>न्यादर्श</u>

प्रस्तुत अध्ययन में इंदौर जिले की चयनीत पाठशालाओं के कक्षा 9 तथा 10 में पढ़ने वाले 100 लडत्रके और लड़कियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। प्रदत्तों का संकलन करने के लिए Family Relationship Inventory (FRI) of Sherry and Sinha) और Educational Interest Record (EIR) of Kul Shreshta का उपकरणों के रूप में उपयोग किया गया।

– <u>निष्कर्ष</u>

– शैक्षिक विकल्प का स्वचयन करने में अस्वीकृत बच्चे और स्वीकृत बच्चों में सार्थक अभिरूची नहीं पाई गयी।

– स्वीकृत और अस्वीकृत लड़कों में शैक्षिक विकल्प का स्वचयन करने में अन्तर पाया गया मगर लड़कियों में किसी तरह का अन्तर नहीं पाया गया।

– स्वीकृत लड़कियों ने पहली पसंद फाईन आर्टस विषय को दी है तथा अस्वीकृत लड़कियों ने फाईन आर्टस विषय में कम अभिरूची दिखाई। तकनीकी को स्वीकृत लड़कियों ने दूसरी पसंद दी है और एग्रीकल्चर समाज विज्ञान और वाणिज्य में कम अभिरूची दिखाई है। अस्वीकृत लड़कियों की ज्यादा पसंद वाणिज्य, एग्रीकल्चर और गृहशास्त्र विषय में पायी गयी, मगर विज्ञान में कम पायी गई।

– स्वीकृत लड़कों में विज्ञान और तकनीकी में अधिक अभिरूची पायी गई मगर समाज विज्ञान, वाणिज्य फाईन आर्टस, एग्रीकल्चर और गृहशास्त्र में कम अभिरूची पायी गई मगर एग्रीकल्चर समाज विज्ञान, गृहशास्त्र और विज्ञान में कम अभिरूची पायी गई।

2 <u>तेजप्रीत कौर</u>

"शहरी युवाओं की नजर में माता–पिता द्वारा चुनी गई अनुशासन पद्धति का मान्य सामाजिक व्यैक्तिक कारकों के साथ सम्बन्ध का अध्ययन"

(1996)

– उददेश्य

परिवार का सामाजिक आर्थिक स्तर के अनुसार लड़का–लड़की के माता–पिता द्वारा चुनी गई अनुशासन की पद्धतियों और मान्य सामाजिक व्यैक्तिक कारकों का अध्ययन करना।

(1) बच्चों के जन्यक्रम के अनुसार लड़का–लड़की के माता पिता द्वारा चुनी गई अनुशासन की पद्धतियों और मान्य सामाजिक व्यैक्तिक कारकों का अध्ययन करना।

(2) परिवार के प्रकार के अनुसार लड़का–लड़की के माता पिता द्वारा चुनी गई अनुशासन की पद्धतियों और मान्य सामाजिक व्यैक्तिक कारकों का अध्ययन करना।

(3) माता–पिता की शिक्षा के अनुसार लड़का–लड़की के माता पिता द्वारा चुनी गई अनुशासन की पद्धतियों और मान्य सामाजिक व्यैक्तिक कारकों का अध्ययन करना।

– न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन लुधियाना शहर की दो शासकीय शाला में से 13 से 15 वर्ष के कक्षा–8 और 9 में अध्ययनरत 50 लड़कियों और 50 लड़के यादृच्छिक रूप से न्यादर्श का चयन किया गया। प्रदत्तों का संकलन रूप रेखा गर्ग द्वारा निर्मित Childrens Perception of Parentel Disciplinury Practice Scale' द्वारा किया गया।

– निष्कर्ष

- परिवार का सामाजिक आर्थिक स्तर के अनुसार बच्चों के माता–पिता द्वारा अपनाई गई अनुशासन की पद्धति और मान्य सामाजिक व्यैक्तिक कारकों के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

- बच्चों के जन्मक्रम के अनुसार बच्चों के माता पिता द्वारा अपनाई गई अनुशासन की पद्धति और मान्य सामाजिक व्यैक्तिक कारकों के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

- परिवार के प्रकार के अनुसार बच्चों के माता–पिता द्वारा अपनाई गई अनुशासन की पद्धति और मान्य सामाजिक व्यैक्तिक कारकों के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- माता–पिता की शिक्षा के अनुसार बच्चों के माता–पिता द्वारा अपनाई गई अनुशासन की पद्धति और मान्य सामाजिक व्यैक्तिक कारकों के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(4) <u>राजेन्द्र शुक्ला</u>

"महिलाओं के प्रति समाज में व्याप्त भेदभाव पूर्ण मान्यताओं की जानकारी प्राप्त करना"

(1997–98)

– <u>उद्देश्य</u>

- समाज में महिलाओं के प्रति फैली भेदभावपूर्ण मान्यताओं की जानकारी प्राप्त करना।
- प्राचीन समाज द्वारा निर्मित भेदभाव पूर्ण मान्यताओं के प्रति वर्तमान में बालिकाओं के विचारों एवं भावनाओं की जानकारी हासिल करना।
- भेदभावपूर्ण मान्यताओं के प्रभाव स्वरूप बालिकाओं की अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- महिलाओं में स्वयं के प्रति सामाजिक चेतना व जागरूकता की जानकारी प्राप्त करना।
- वर्तमान परिवर्तनशील परिस्थितियों में महिलाओं को मानसिकता में परिवर्तन परिलक्षित है अतः अभिवृत्ति में परिवर्तन का अध्ययन करना।
- यह भी सत्य है कि महिलाओं के प्रति समाज में व्याप्त भेदभावपूर्ण मान्यताऐं उनके व्यक्तित्व पर कुण्ठा व हीनता का प्रभाव छोड़ती है, अतः ऐसी संभावनाओं का अध्ययन करना भी आवश्यक हैं।

– न्यादर्श

बिलासपुर के थाली ब्लाक के अन्तर्गत आने वाली शालाओं की कक्षा 11–12 वीं के विभिन्न वर्गो की 150 छात्राओं को चयनित किया गया है।

– निष्कर्ष

- समाज में फैली भेदभावपूर्ण मान्यताओं का बालिकाओं की अभिवृति पर प्रतिकूल प्रभाव वर्तमान में भी परिलक्षित है।
- शिक्षित परिवारों की तुलना में अशिक्षित परिवारों में इनका प्रभाव अधिक स्पष्ट प्रदर्शित हुआ।
- शिक्षित एवं समाज के उच्चवर्ग में महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण मान्यताओं में परिवर्तन परिलक्षित हुआ अर्थात् विचारों में कुछ परिवर्तन आया है।
- एस.सी/एस.टी. एवं पिछड़ी जातियों में आज भी ये मान्यताऐं अधिक मान्य एवं प्रचलित है।

(5) ए.डी. भूमिरया

"दोहादे ब्लाक की प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों के जातियता (जेन्डर) के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन"

(1998–1999)

– उद्देश्य

- दाहोद ब्लाक की प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों के जातियता (स्त्री–पुरूष) और जातियता के विषय में अभिवृत्ति के बीच में संबंध का अध्ययन करना।
- दाहोद ब्लाक की प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों के आवास और जातिय अभिवृति के बीच में संबंध का अध्ययन करनना।
- दाहोद ब्लाक की प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता और जातिय अभिवृति के बीच में संबंध का अध्ययन करना।

- दाहादे ब्लाक की प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों की आयु और जातिय अभिवृति के बीच में सबंध का अध्ययन करना।

– <u>न्यादर्श</u>

दाहोद ब्लाक की शासकीय प्राथमिक शालाओं के 300 शिक्षकों को यादच्छ निदर्शन पद्धति से चुना गया।

	पुरूष	स्त्री	कुल
शहरी –	08	100	108
ग्राम्य –	80	106	192
कुल –	94	206	300

– <u>निष्कर्ष</u>

- पुरूष और स्त्री शिक्षकों के बीच जातियता के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर पाया गया। स्त्री शिक्षकों से पुरूष शिक्षकों की अभिवृति सकारात्मक पायी गई।

- ग्रामीण और शहरी शिक्षकों के जातियता के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर पाया गया। शहरी शिक्षकों की अभिवृति ग्रामीण शिक्षकों से सकारात्मक दृष्टि से पायी गई।

- उच्च शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की अभिवृति निम्न शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों से अधिक पायी गई।

- कम आयु वाले शिक्षकों की अभिवृति अधिक आयु वाले शिक्षकों से सकारात्मक दृष्टि से अधिक पायी गई।

(6) <u>सुकन्यादास और रेहाना घड़ियाली</u>

"अभिभावकों की बच्चों की जातिय भूमिका की समज और जातिय रूठिबद्धता का अध्ययन"

(1998–99)

– उद्देश्य।

- लड़कियों में स्त्रीगुण और लड़कों में पुरूषगुणों का अध्ययन करना।
- रूढ़िबद्ध जातिय गुण आयु के साथ बढ़ते है या नहीं इनका अभ्यास करना।
- पुरूषगुण और स्त्रीगुण पूर्व किशोरावस्था से उत्तर किशोरावस्था में अधिक बढ़ते है या नही इनका अभ्यास करना।

– निष्कर्ष

- आधुनिक (Modern) अभिभावकों का बच्चों के प्रति व्यवहार और अभिवृति में समानता पाई गई।
- रूढ़िबद्ध अभिभावकों का बच्चों के प्रति व्यवहार में जातिय रूठिबद्धता पाई गई।
- अभिभावकों की आधुनिकता रूढ़िबद्ध जातियता का विरोध करती है और बच्चों के प्रति जातिये पक्षपात में कटोती करता है।

(7) जागृति राय

"1990 से 1998 तक उड़िसा के कटक जिले के जगतसिंगपुर ब्लाक की कक्षा 5 से 10 की लड़कियों को शाला छोड़ देने की समस्या के कारणों का अध्ययन।"

(1999)

– उद्देश्य

- लड़कियों को शाला छोड़ने में मजबूर करने वाले कारणों का अध्ययन करना।
- लड़कियों को शाला छोड़ने में मजबूर करने वाले शासकीय और पारिवारिक कारणों का अध्ययन करना।

– निष्कर्ष

- अधिकत्तर अभिभावक लड़कियों की शादी कम आयु में करना पसंद करते हैं।
- अधिकत्तर लड़कियों का कहना था कि उनके पास झाड़ू लगाना, बर्तन साफ

करना, छोटे बच्चों की देखभाल करना, खाना पकाना, खेतों में काम करना, पानी लाना, गोबर लाना आदि कार्य रूढिबद्ध तरीके से उनके उपर थोप दिये गये हैं।

(8) <u>मथैयालुगन</u>

"बच्चों के दूरदर्शन देखने पर अभिभावकों का नियंत्रण और मध्यस्थता का अध्ययन" (1999)

– <u>उद्देश्य</u>

- अलग–अलग प्रवर्ग के बच्चों की ग्रहणशीलता पर अभिभावकों का नियंत्रण और मध्यस्थता की असर को ज्ञात करना।
- जातियता (Gender) पर अभिभावकों के नियंत्रण और मध्यस्थता की असर का अध्ययन करना।
- "बच्चों की ग्रहणशीता और अभिभावकों का नियंत्रण और मध्यस्थता" के बीच सहसंबंध ज्ञात करना।
- "अभिभावकों की दूरदर्शन प्रति अभिवृति और बच्चों की ग्रहणशीलता और अभिभावकों का नियंत्रण और मध्यस्थता के बीच संबंध ज्ञात करना।

– <u>न्यादर्श</u>

प्रस्तुत अध्ययन में मद्रास की 6 पाठ्शालाओं के कक्षा 6 और 9 के 397 छात्रों और उनके अभिभावकों को न्यादर्श के रूप में चुना गया। प्रदत्तों का संकलन प्रश्नावली (Rating Scales) द्वारा किया गया। 'Duncan Multiple Range Test' और Producat Moment Correlation द्वारा प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया।

– <u>निष्कर्ष</u>

- अधिक आयु वाले छात्र कम आयु वाले छात्रों से अभिभावकों का नियंत्रण और मध्यस्थता को ज्यादा ग्रहण करते हैं।
- लड़कियों पर अभिभावकों का नियंत्रण और मध्यस्थता लड़कों से अधिक पायी गयी।

- सामाजिक–आर्थिक रूप से उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के छात्रों की तुलना में मध्यम वर्ण के छात्रों पर अभिभावकों का नियंत्रण और मध्यस्थता की असर अधिक पायी गयी।
- अधिक शैक्षिक योग्यता का बच्चों पर अभिभावक का नियंत्रण और मध्यस्थता पर असर होता है।
- बच्चों की ग्रहणशीलता और अभिभावकों का नियंत्रण और मध्यस्थता में सार्थक सहसंबंध पाया गया।

(9) <u>राजेन्द्र कुमार</u>

"प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर कक्षा कक्ष के अन्दर व्यवहार में हो रहे लिंग पक्षपात का अध्ययन"

(2003–04)

– <u>उद्देश्य</u>

- कक्षा कक्ष के अन्दर की लैंगिक असमानता का अध्ययन करना।
- लैंगिक भूमिका के प्रति शिक्षकों का पक्षपात और प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना।
- लैंगिक भूमिका के प्रति विद्यार्थियों का पक्षपात और प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना।
- कक्षा कक्षा के अन्दर विद्यार्थियों का आत्मविश्वास, आत्म सन्मान और सकारात्मक प्रतिमा को बढ़ावा देना।
- कक्षा कक्ष के अन्दर लिंग असमानता और लिंग पक्षपात ज्ञात करके उसको दूर करने के सुझाव देना।

– <u>न्यादर्श</u>

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यप्रदेश राज्य के खरगोन जिले की 4 शालाओं में से 200

विद्यार्थियों (100 लड़के और 100 लड़कियों) और 50 शिक्षकों (25 महिला और 25 पुरूष) को उद्देश्य न्यादर्श पद्धति से अभ्यास के लिये चुना गया। प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रूप में विद्यार्थियों के लिये वैकल्पिक प्रश्नावली शिक्षकों के लियें निर्धारण मापनी और कक्षा कक्ष अवलोकन अनुसूची लिया गया।

– <u>निष्कर्ष</u>

- कक्षा कक्ष के अन्दर के व्यवहार में लैंगिक असमानता पाई गई।
- 75 प्रतिश शिक्षकों की अभिवृत्ति लैंगिक हितेच्छुक और 25 प्रतिशत शिक्षकों की अभिवृत्ति लैंगिक पक्षपातपूर्ण पाई गई।
- कक्षा के अन्दर 30 प्रतिशत शिक्षका लड़कों और लड़कियों को समान स्वतंत्रता देते हैं और 70 प्रतिशत शिक्षक समान स्वतंत्रता नही देते हैं।
- अधिकत्तर शिक्षक लड़कियों के प्रति लैगिंक हितेच्छुक व्यवहार करते हैं जो लड़कियों के आत्म सम्मान और आत्म विश्वास को बढ़ाता है।

तृतीय अध्याय

शोध प्रविधि